

TDC PART I, HISTORY (HON), PAPER-1

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, आर०बी०जी० आर०
कोलैज, महाराजगंज (सिवान)

नवपाषाण काल (शेष भाग)

18 SEPTEMBER
TUESDAY

2014/54

SEPTEMBER 07

S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30

यद्यपि चिकना किया हुआ शील
के हथियार कम मिले हैं। किन्तु शिल-लोटे समान्तर
बात-बलेड और अर्द्धचन्द्रिका उपलब्धनीय हैं।
हड्डी के उपकरण में हड्डी की सूई, तीर और उपरलों
के मनके (Beads) और लटकन (Pendants) गंगा
घाटी के प्रारंभिक कृषकों के उपकरण और आभूषण
थे। आनाओं में गेहूँ, मूँग और धान के कार्वनीकृत
अवशेष से कृषि कर्म का स्पष्ट ज्ञान होता है।

चाक निर्मित वर्तनों में लाल, भूरी वार्निश, कृष्ण
और लाल-रंग के वर्तन गंगाघाटी के प्रारंभिक
कृषकों के वर्तन थे। मसुरिया डीह (बेभुयराय) से
पाषाण हथियार और तो नहीं मिले हैं किन्तु हड्डी
की सूई, मनके और चिपेद की तरह के वर्तन अवश्य
मिले हैं। अतः गंगा के किनारे पश्चिम से पूरब की
और नव पाषाण काल की संस्कृति का प्रसार होता
दीख पड़ता है।

पूर्वी भारत में उड़ीसा के कुचाई से
नवपाषाण काल के स्तर नव पाषाण काल के
अवशेष मिले हैं। यहाँ से चिकना किये गये हथियार
मिले हैं और कृषि कर्म के औजार भी मिले हैं।
पूर्वोत्तर भारतीय नवपाषाण संस्कृति — इस क्षेत्र में
असम, मेघालय, नागालैंड, मिज़ोरम, अरुणाचल प्रदेश
और बंगलादेश को शामिल किया जाता है।

बहुपुत्रा घाटी से नव पाषाणिक चिकने कुल्हाड़ी
प्राप्त हुये हैं। असम के दओजली, हैडिंग रब के
कांस्य के सरस्वर और मरकटोला से गोल और
कंधादार समंत कुल्हाड़ियाँ, डोरी और लोकरी खाप
मुदमोड तथा शिल-लोटे प्राप्त किये गये हैं।

दक्षिण भारतीय नव पाषाण संस्कृति—
 नव पाषाण युग के उत्तमोत्तम भी तीन स्थान से मिले हैं।—
 ① ब्रह्मगिरि ② संगन काल्लु और ③ उत्तूर। ब्रह्मगिरि
 की खुदाई H. N. Wheeler ने की थी। यहाँ के तीन
 सांस्कृतिक कालों में प्रथम काल, नवाश्म युग का था।
 यहाँ से पाषाण परशु, क्षुद्राश्म और हस्तनिर्मित
 मृदभांड मिले हैं। आभूषण में गोमेद और स्फटिक
 के मनके मिले हैं। शव पात्र में शव दफनाने के
 प्रमाण मिले हैं। संगन काल्लु (कर्नाटक) से पूर्व
 पाषाण और महाश्म युग के बीच में नवपाषाण
 संस्कृति के अवशेष जिसमें चिकना किया हुआ
 पाषाण औजार, हस्तनिर्मित बर्तन और फलक प्राप्त
 हुये हैं। उत्तूर (औंध्रप्रदेश) से नवाश्म काल के
 दो स्तर मिले हैं। प्रथम स्तर के निवासी घाहा की
 घाटी में कृषक जीवन की शुरुआत की थी। पशुपालन
 और जंगली आनाजों के संग्रह से दूसरे स्तर में
 पशुपालन और कृषि कर्म करने लगे। यहाँ की
 नवाश्म संस्कृति भी ब्रह्मगिरि और उत्तूर के सदृश्य है।

इस प्रकार भारत में नवपाषाण
 संस्कृति सब जगह एक जैसी नहीं थी। विकास के
 लक्षण के दृष्टि से बलुचिस्तान और गंगा घाटी
 महत्वपूर्ण थी। इन्हीं दोनों के गर्भ से उत्तर भारतीय
 ताम्र पाषाण संस्कृति का उद्गम हुआ जिससे भारतीय
 संस्कृति की पृष्ठभूमि तैयार हुई थी।
 स्थायी आवास, मिश्रित अर्थव्यवस्था, ग्राम जीवन से
 कबीले संगठन की शुरुआत, मानव जीवन के अर्थव्यवस्था
 में ही, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में क्रांति
 ला दिया था। फलतः आदिम समाज का अन्त

30 AUGUST
THURSDAY

WEEK-35 242-123

AUGUST '07

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31								

और समग्र समाज का उदय होने लगा। अफ्रीका और यूरोप की भाँति एशिया महादेश में भारतीय उपमहाद्वीप भी आदि मानव और उसकी संस्कृति का एक प्रमुख केन्द्र था। विश्व प्रगतिहास की भाँति यहाँ भी पुरापाषाण के निम्न शिकारी जीवन से मध्यपाषाण काल के उच्च शिकारी जीवन का विकास हुआ और फिर कृषि के द्वारा नवपाषाणिक ग्राम संस्कृति का प्रसार हुआ था।